

विद्यस्य निस्सरवजन कस्य महासूखस्य न त्वा जीवंत
वस्तुयन मा लिखेक ॥ येन मृग नं ॥ लक्ष्मी धन का
जनय च नारु वस्तु ॥ विज्ञा क नार्थं किमि न य हीनं
वृक्षा विवृक्षा वज्र य रु नि सः ॥ कम जीवंत वस्तु य न
मा लिखेक ॥ धन न य नं ॥ अलिखेक महा वज्र रु क्षरु
केन म स्मृ गं ॥ द दामि सर्व वृक्षा ना किं वृक्षा न च संरु

PINDARIVYAVIDHI

वं ॥ यूष्मन्मा ॥ ॐ आर्यवेवाच नाय सादि ॥ ॐ य
॥ गमा मा रु हा न क स या सादि यूष्मन्मा ॥ ॐ न न्दा
य स्वा हा ॥ ॐ रु डा य स्वा हा ॥ ॐ ज या य स्वा हा ॥ ॐ मी
म्या य स्वा हा ॥ ॐ क पि ना य स्वा हा ॥ ॐ स न ही य स्वा हा ॥ य
के ॥ गमा मा रु हा न म ४ स्वा हा ॥ धन ॥ धन म रु या रु ॥
स्वानुवा य ॥ अथ मा अग्नि द व ना य या सा दि यूष्मन्मा
॥ ॐ मा नि रु डा य स्वा हा ॥ ॐ यू र्नु रु डा य स्वा हा ॥

ॐ धन न्दा य स्वा हा ॥ वैश्वना या व ऊ य यूष्मन्मा
स्वा हा ॥ ॥ धन यू जा स्व र्क ॥ ॐ दं क ये न म गी न्धं
वि स ह्वा न रु ल्य नः द दा मि ये न म रु क्वा य मि ण
ऊं ऊ था म्भ र्वं ॥ सिं ध न ॥ वं लु नं सि न्द न नं यू र्नु
य वि रं या य ना स नः आ य दा रु नं क नि र्वाः ल की
मि ष्म मि स र्वे दा ॥ ऊं ऊ म ॥ अ य न्क य न म व र्कः स

हसां ऊजि कं रथाः यथा यवीर वासं चः ददा मि
यजमं यदा ॥ खान ॥ मान कि माध विजा मि मं सुभ
चम्य कादिहिः ॥ ० ॥ या वि यु य सं श्रु कंः नाह ना
ययु य मानि का ॥ नैव अ ॥ नैव य स र्व सं श्रु कंः खा
अला अ समनि कंः वलु गन्ध न ॥ अयु नः ददा मि
यकि नृ कं गां ॥ धनि वा का य ॥ उद धि वि र कं स

यय स्वा हा ॥ हन हन ॥ नक्का ह नाम धू क कं टि छि
सु कादिः दा छि म्य क ॥ क र ना ध द लु धा वानः
ता न ग ना ल म धू क न स र्व य न नः ना या न क छि ह
न क लु कि ना दि मु छि ॥ य क्कान ॥ ता न न मा य द धि
ख सि म या वि का नः सु य अ न य र्व न स य न स य न
॥ अ धू म य नी वि वि ध नि मि ० ला व का दिः सं या क

हसां ऊजि कं रथाः यथा यवीर वासं चः ददा मि
यजमं यदा ॥ खान ॥ मान कि माध विजा मि मं सुभ
चम्य कादिहिः ॥ ० ॥ या वि यु य सं श्रु कंः नाह ना
ययु य मानि का ॥ नैव अ ॥ नैव य स र्व सं श्रु कंः खा
अला अ समनि कंः वलु गन्ध न ॥ अयु नः ददा मि
यकि नृ कं गां ॥ धनि वा का य ॥ उद धि वि र कं स
यय स्वा हा ॥ हन हन ॥ नक्का ह नाम धू क कं टि छि
सु कादिः दा छि म्य क ॥ क र ना ध द लु धा वानः
ता न ग ना ल म धू क न स र्व य न नः ना या न क छि ह
न क लु कि ना दि मु छि ॥ य क्कान ॥ ता न न मा य द धि
ख सि म या वि का नः सु य अ न य र्व न स य न स य न
॥ अ धू म य नी वि वि ध नि मि ० ला व का दिः सं या क

यत्र विधिनयसाधितानं ॥ धृति ॥ कयूचवचुनं
गालं कर्कममगनाशवः सीनरुखलुनिष्ठासः
धृतिरुद्यानकृत्यनं ॥ मरु ॥ दीवार्यसकखीरं
दीवाकालाकमपुलः शायामियसंसाकं ॥ स
वृक्षानंयसिद्धया ॥ नाय ॥ यधुमीरुदुय
रुदुमीरुथगतः हवनसवाचिन्धिः

चवंवादिमहासनवनं ॥ लुकि ॥ विधुर्कसर्वसंक
लः लावालावविवक्तिर्गः ॥ कसिंहनमसायि ॥
शुक्लकिर्निर्मातं ॥ १ ॥ यसिद्धिग्यम
श्रीः सर्वसंयक्तिदायकः नन्दाकडायासीम्याक
विनायनमासुर्क ॥ २ ॥ लुंजसर्वजनिजार्गः वेद्य
वर्तुमहाजालः वेद्यननामहवन्दः सर्वसंयक्ति

दायकं ॥ अथ गन्धर्वसर्वविधियनियुक्तं नमस्तु ॥
 ॥ ॐ ॥ धनयुक्तं विना स्थापनं ॥ कृष्णसनवाक्यं ॥
 आदिः यथा गन्धर्वसर्वविधियनियुक्तं नमस्तु ॥
 नामध्याययुक्तं विना कृष्णसनमयधिसिद्धिं ॥
 यिनामहममकनामध्याययुक्तं विना कृष्णसनमयधिसिद्धिं ॥
 स्वयिनामहमकनामध्याययुक्तं विना

॥ ४ ॥

का कृष्णसनमयधिसिद्धिं ॥ • ॥ किनादक ॥ उं कि
 नादकयि लुप्त्यर्थं स्वधा ॥ इति ॥ उं कर्कनिर्वाच नि
 विनाच निर्वय किदुक्त सर्वकर्मोवनन कर्यं क
 नियस्वधा ॥ यथा मृत ॥ उं स किनायसर्वे लुप्त्य
 ससादकायसु इति सदाधिसिद्धिं सदाधिसिद्धिं सदाधिसिद्धिं
 यकननसहिताय स्वधा ॥ लं स्व ॥ उं यः लुप्त्य

उं सर्वपापविनासाय नमो

हाय ॐ अयनिमगय ॐ रज्ञानसंलावायविम
धर्मसंगमनीसमुगर्भसंलावविसुद्धमहानयमि
वानेसुधा॥ मयमांस॥ ॐ सर्ववित्तस्यमांसदा
नयावमिकायुजामसासमुद्रनसमयसुधा॥
ॐ अमिकाययजमुद्रनमनो रुचः अमरुसंरु
चः अमरुविक्रान्तकमनसुद्धकसावननरुचक

नियसुधा॥ धनवन॥ ॐ सर्ववित्त^{मा}वायवि^{मा}म
धनमहावजो रुचवन्नवनयावमि^{मा}यजामय
समुद्रननसमयसुधा॥ सिंधव॥ ॐ सर्ववित्त^{मा}
नयावमि^{मा}यजामसासमुद्रननसमयसुधा॥
जजम॥ ॐ सर्ववित्त^{मा}यदी रुचसावं काववसु
मीलयावमिकायुजामसासमुद्रननसमयसुधा॥

॥ स्नान ॥ ॐ सर्वविघ्नो यो ना जाययुष्यस्य ह्य
नुमि नायु जा मेघ समुद्र न न समय स्वधा ॥ नैवाय ॥
ॐ सर्वविघ्नो नैवाय कान या न मि यु जा मेघ समुद्र न न
समय स्वधा ॥ धनि वा ॥ ॐ दधि विरु क नैवाय स्वधा ॥
॥ हुन हुन ॥ लं लाह ना यादि ॥ मा ध्व ॥ स्नान न मा र्थ या
दि ॥ धूय ॥ ॐ धर्म र धू य च न धू य स्नान या न मि नायु

जा मेघ समुद्र न न समय स्वधा ॥ मरु ॥ ॐ सर्वविघ्नो
लेर का लय र दी य च नि धि या न मि नायु जा मेघ समुद्र
न न समय स्वधा ॥ माय ॥ ॐ सर्वविघ्नो यो ना जाय का
ना अ स्नान या न मि नायु जा मेघ समुद्र न न समय स्व
धा ॥ लुमि ॥ ॐ धर्म र मू दा ॥ ॐ मू न र म हा मू न स वे उ
म मि य नि ॥ धन ना जा य म ध ग ना या ह न स म्य क
द द्याय ॥ न अ था ॐ ॥ धन र वि ॥ धन र स वे या य वि

ॐ धनं सर्वकर्मायन न कर्तव्यं कविय स्वधा ॥ सुमि ॥ वि
धुतं सर्वसंकल्पयादि ॥ अथ ॥ ० ॥ धनं विदुषा न
कृष्णसन् ॥ ॥ कृष्णं न आनर्कं ॥ वा ॥ अथादि ॥
यथं न कथं गमायादि ॥ अथ विनामरु ॥ अथि तीम
रु ॥ अथि ती अमुक नाम ध्याय कृष्णसन् मूयिहि
ता ॥ कृष्णसन् ॥ इना ॥ न स्व न हाय ॥ न न ॥ स्वान
न ॥ कर्तन क ॥ नै न मा वृ हाय ॥ न मा धर्माय ॥ न मा स

घाय ॥ धायक ॥ ॥ धनं विदुषा न कर्क ॥ अथा
दि ॥ अथ न कर्क न मा मा पूर्व वाधिस त्व चर्या च
न रि ॥ अथि स त्व रुम व न ॥ मा ना यि नृ य दृ ग म त्व
स फ य नृ य त्व स फ नि क त्व ॥ य धा ना वि धा नार्थ का स
य ॥ य धा य न कृ दि व न ॥ अ स्म रु धायक ॥ ॥ अज
मान स ॥ व र्ध सां व त्व न वि त्व दे नै का म नार्थ ॥ य धा

नमो भगवते वासुदेवाय
६ नमो

आ ०४ म ०३

236

I

नायि^{ना} अमकनामध्यायः यं नमः न नुनास
निनासवस्तुसन्धकाः सद्यः नासमधूसमासाः स
इत्यासदधिसखी सुसंवायकननसहिनायः कलसि
नावैतिः अयि सुददस्यामिः सयुषाः धूयदीयगन्ध
नीयथादि संशुक्तः ऊजमानस्य यथसांवक्तुविधि
लुप्तसंधा ॥ ॥ अयिनामहमकनात्मनन

विश्वसंधा ॥ अयिनामह ॥ अयिनामह ॥
निनादकः ३३ : यक्षमनः वंशः सद्यमांसः का
युजाउर्था ॥ चतः सिधनः ऊजमः नं कनाउरिना
ऊः खानः नीयथः दनद्वनः माध्याः धविथाः धूः
मनः नाय ॥ सुनि ॥ विधूक्त्यादि ॥ अह ॥ ऊदीय
मानअनसंकल्पसिद्धिनेरु ॥ • ॥ धनविकनक

मम सन ॥ अथादि x यथा क मथा ग x आदि x ॥ ५ ॥
धन विकचयि सुजा न क म ॥ ० ॥ अथा x ॥ यथा
मरु क न जा गः अयु जा य च वा न्ध वाः आ ला गी ला
वि नू पा चः हा ना हा न क न म मः त मी द न न यु माः
का का सा का क यि लुः स्या ना स्या स्या न यि लुः वि क
च यि लु न स्य स्व धा ॥ उ थ यि जा हा य वि धि उ थ ॥

मु नि ॥ मरु ला मरु म हा धी वाः मरु ला कृ य ना य न
आ ला य स्य क न य नः वृ क ल्य पु न मा मि ह ॥ न न या
मि डि क यो नि थः वृ क द वा गु ना य का उ ल्य न रु
व का ना नः य वृ क ल्य पु न मा मि ह ॥ ६ ॥ अथा x ॥
उ दि य मा x ॥ अथा आ च म न स नि क स्व धा ॥ वृ गु नि
ना या व का व ना स न ॥ ना हा क सि च क ॥ कि क य जा या
र धा क नि धि य ॥

२ जित्स्नानादिनस्नानमासाद्याय
वक्त॥ नाहो ध्यायक॥ आगनवाधियक॥ ॥
स्नानकन॥ युत्रयूजाः दक्षिण॥ आसिर्वाह॥ कमाय
न॥ विसर्जन॥ ॥ कृष्णन॥ ध्यायववाक्य॥ ॥ या
वैकसर्वसत्त्वात्तः अष्टुजावाक्यसामुद्राः संलग्ना
वाः उदययाउकावाः नृयिनावाः अत्रयिनावाः सं
क्षिप्तावाः असहिनावाः सर्वे नमया मूढा स्थाययि

त्वाः उदयभरमहायडासुखावती गच्छन्तु स्वध॥
यिष्टुहायस्वस्ति वाक्यन॥ ॥ ध्यायसंन॥ ध्यायक
न॥ उदयभर॥ समकन॥ उदयभरवत्तकिन॥
वत्तावननविष्मधनः कृष्णकिमार्गविगच्छन्ति
अगमिमा गच्छन्तु उदयिन्॥ ॥ यिष्टुकायनायावा
नयिन्॥ ॥ वस्वधनवत्तस्ववाक्ययुत्रुदयानक्य
द्वयक॥ यस्मिन्मध्यावसुद्ध्याकक॥ गन्तुकनके॥ ॥

१ हा निदस निमिः विंलुन थयत तातः किडायासुः
 शय्याग कालनः द्या तात यनर यद यया सिद्धं
 बाधय केयात कननः लनसूतावाः ॥ सुयि
 तातः ॥ उव यितासुः यितासुः ॥ जिउवातुयाः
 उनिदिय कातनः मखनावाः कालनः लुग थन
 निः यं व थ यितः ॥ उवाहानयाः कातनः यं व थ यितः

सत थागनयाः कालनः सतमनिः ॥ नायक जि
 स्तयाः कातनः ॥

॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

